VOTERS MIGRATION

You Looses Election Because You Could Not Keep Engaged Your Voters with You And they Migrated To Other Party.The Shortest, Most Blunt & State Forward & Scientific Explanation For Defeat & Victory In Elections.

Keeping Your Voters engaged Till last Voting day In Continuous Manner Is A Challenge For all party.In Fact Voters Migration From One Party To Another Party Is a Natural Process & Only Reason For success & Failure In election.

If We Try To Understand The Voters Migration Process, we will Find That This Process Is a cyclic & Reversible One Too.Migration Process dynamics tell Us That what Factors Motivates To Move from One Party To Another Party & what Should Be effective remedies For Our Target.

Our expertise Helps You To Keep A Strict Vigil On Voters Migration Process & It’s dynamics And Can Be Influence To Mold It In A specific favor.We Work On Several Layers Like In Normal days what Kind Of Actions Should Be Taken That Voters Feel Bounded with You Don’t Leave You. In same way what Course Of Action Should Be There so That Sufficient Voters should Be Migrated To Your Party From Other Parties.While In election days,When There Is Greatest Possibilities Of Voters Shift, It Is Important To Be Focused On This Agenda.

Come ! Experience Our Scientific working By which You Can Keep engaged Your Voters Till Last Voting day And also can Improve your existing Vote Bank By Making reverse Voters Migration.

विस चुनावः चुनावी रणनीतियों का विश्लेषण कर रहे हैं पोलिटिकल कंसलटेंट एके मिश्र

यक्ष प्रश्न व भगीरथ प्रयत्न

> *उत्तर प्रदेश चुनाव ही ऐसा चुनाव है, जहां से सारे राजनैतिक मापदंड निर्धारित होते हैं जैसे की किसी राजनेता या फिर पार्टी की कुशलता, पॉलिटिकल कंसलटेंट की दक्षता इत्यादि । इन चुनावों में पहली बार लगभग सभी संभव तरीकों का उपयोग किया गया है और सबसे बढ़कर पहली बार इन चुनावों में लगभग सभी पार्टियों ने पॉलिटिकल कंसलटेंट की सेवाएं ली और बढ़ चढ़ कर तकनीकी, जैसे की सोशल मीडिया इत्यादि का उपयोग किया गया है।*

कई राज्यों के विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद बहुत से लोगों ने राहत की सांस ली, नेता हो या फिर पार्टी वर्कर या फिर सरकार या फिर चुनावआयोग, ऐसा लगता है जैसे इन चुनावों ने पूरे देश के विभिन्न क्रिया कलापों को जैसे एक विराम लगा दिया था, और हर तरफ सिर्फ और सिर्फ चुनावों की ही चर्चा हो रही थी! होती भी न क्यों? ये चुनाव हर मामले में सबके लिए अग्नि परीक्षा थे, कुछ यक्ष प्रश्न सबके सामने थे जिनका उत्तर देने के लिए राजनीति के सारे अवयवों ने भगीरथ प्रयास किया, परंतु सवाल ये है कि भगीरथ प्रयत्न के बाद भी क्या लक्ष्य हासिल होगा? क्या स्पष्ट बहुमत रूपी गंगा उतरेगी?

सबसे पहले ये जानने की कोशिश करते हैं कि क्यों इन चुनावों को हम अग्नि परीक्षा की संज्ञा दे रहे हैं? पहला कारण ये है कि राष्ट्र स्तरीय से भी ज्यादा कठिन समझे जाने वाले उत्तर प्रदेश के चुनाव थे! मेरा ऐसा मानना है कि उत्तर प्रदेश चुनाव ही ऐसा चुनाव है जहां से सारे राजनैतिक मापदंड निर्धारित होते हैं जैसे की किसी राजनेता या फिर पार्टी की कुशलता, पॉलिटिकल कंसलटेंट की दक्षता इत्यादि! इन चुनावों में पहली बार लगभग सभी संभव तरीकों का उपयोग किया गया है और सबसे बढ़कर पहली बार इन चुनावों में लगभग सभी पार्टियों ने पॉलिटिकल कंसलटेंट की सेवाएं ली और बढ़ चढ़ कर तकनीकी, जैसे की सोशल मीडिया इत्यादि का उपयोग किया गया है! हर हाल में चुनाव जीतने की लालसा ने चुनाव पूर्व ही दो विरोधी पार्टियों को हाथ मिलाने पर मजबूर भी कर दिया। अब सवाल यक्ष प्रश्न का आता है, यहाँ हम यक्ष प्रश्न का संबोधन इसलिए कर रहे हैं कि अगर स्पष्ट बहुमत की सरकार आती है तो लक्ष्य सिद्ध होता है नहीं तो राजनैतिक अनुभव, दक्षता, पॉलिटिकल कंसलटेंट की योग्यता इत्यादि जो की चुनावों के प्रबंधन का रणनीतिक संपादन कर रहे थे, के ऊपर हमेशा ही एक यक्ष प्रश्न रहेगा की आखिर क्यों उत्तर प्रदेश के चुनावों के लिए उनकी रणनीति असफल रही? ध्यान देने वाली बात ये है कि लगभग सभी पार्टियों ने स्पष्ट बहुमत का लक्ष्य रखा है जिसका उद्घोष वो बार बार मीडिया में भी करते रहे हैं कि हमारी सरकार स्पष्ट बहुमत से आ रही है! परंतु मेरा ऐसा मानना है कि राजनैतिक विमर्श या फिर पॉलिटिकल इक्वेशन को प्रभावित करने का कोई तरीका अभी किसी पार्टी के पास नहीं है तभी मतगणना के पूर्वतक सारे नेता अपनी जीत का दावा करते रहते हैं! स्पष्ट बहुमत के अभाव में राजनैतिक पार्टियों, नेताओं और स्वनामधन्य रणनीतिकारों के सामने यह प्रश्न यक्ष प्रश्न की तरह हमेशा रहेगा की आदर्श परिस्थितियों में उनसे क्या चूक हो गयी? नहीं तो यह मान लिया जायेगा कि विगत के चुनावों में किसी पार्टी की जीत ठीक उसी प्रकार से थी जैसे की बिल्ली के भाग्य से छींके का फूटना।

इसके साथ ही साथ कुछ और मिथ्या प्रचलित मान्यताओं में भी बदलाव आएगा! जैसे की विगत दिनों में ऐसी मान्यता बन गयी थी सोशल मीडिया ही चुनावों में जीत दिलाने का एक ब्रह्मास्त्र है परंतु ऐसा लगता है इस बार ये भ्रम भी टूट जायेगा क्योंकि सभी पार्टियों ने इसका खूब प्रयोग किया है और सभी पार्टियां तो जीतेंगी नहीं! अतः ये तथ्य साफ है कि सोशल मीडिया एक साधन तो सकता है चुनावों में विजय दिलाने में पर अंतिम अस्त्र नहीं है! सोचना ये है कि ऐसे कौन से अवयव होते हैं राजनीति और चुनावों की दुनिया में जो चुनावी हार जीत का फैसला करने में महत्वपूर्ण अवयव की भूमिका निभाते हैं! हालांकि मैंने अपने विगत कई साक्षात्कारों में इसका स्पष्ट जवाब दे दिया है फिर भी एक बार इस पर चर्चा होनी चाहिए। लगता तो ऐसा है कि पहली बार नेताओं और राजनैतिक पार्टियों को अपनी क्षमता और महत्वपूर्ण रणनीति से ज्यादा विश्वास धन चलित व्यवस्था पर ज्यादा हो गया है। एक और महत्वपूर्ण यक्ष प्रश्न है जो कि सभी को सोचना चाहिए! किसी पार्टी द्वारा रैली में भीड़ इकट्ठी कर लेना कहाँ तक इस बात का संकेत दे सकता है कि चुनाव में उनकी जीत हो रही है? याद रहे की लगभग सभी बड़े राजनेताओं की रैलियों में बिहार में जबरदस्त भीड़ इकट्ठा हुई थी पर परिणाम कुछ और ही थे! फिर क्यों पार्टियां इस बात का भ्रम पाल के चलती हैं भीड़ का मतलब जीत है! भीड़ का मतलब जीत कदापि नहीं हो सकता है! सबसे महत्वपूर्ण यक्ष प्रश्न तो ये है कि क्यों इतने अनुभव होने के बावजूद, सारी मेहनत करने के बाद और सभी हथकंडे अपनाने के बाद भी दिग्गज नेता या फिर कोई पार्टी क्यों स्पष्ट बहुमत से जीत नहीं पाती है? इसका मतलब साफ है कि मतदाता को अपनी बातों से संतुष्ट न कर पाना और स्पष्ट बहुमत के लिए निर्धारित निम्नतम गणितीय संख्यानुसार मतदाताओं को अपने पक्ष में न कर पाना! इसका अर्थ ये निकलता है कि अभी भी भले ही पार्टियां और राजनेता अपने आप को राजनीति के सूक्ष्म गणितीय सिद्धांतों में माहिर मानते हों पर परिणाम ये सिद्ध कर देते हैं कि अभी उनको और परिपक्वता की जरूरत है विशेषतः भारत जैसे विविधता भरे देश में! अगर राजनेता और पार्टियां अभी भी अपने कार्य प्रणाली को शोधानुरूप बदलाव नहीं लाते हैं तो बार बार उन्हें असफलता का ही मुंह देखना पड़ेगा !

चुनाव परिणामों के बाद हार के कारणों पर आत्म मंथन करने की हमारे यहाँ एक परिपाटी है ! परंतु ये परिपाटी सिर्फ और सिर्फ एक परिपाटी ही है क्यो कि राज्यस्तरीय चुनावों में हार के कारणों का पता लगाना एक कमरे में बैठ कर परिचर्चा से संभव नहीं है ! इसके लिए तो वास्तविक धरातल पर उतरकर गहन शोध करने की जरूरत होती है! इन चुनावों के परिणाम कई नई व्यवस्था को जन्म देने वाले हैं! जैसे की अब चुनाव जीतने के लिए पार्टियां ज्यादा व्यवस्थित तरीके से काम करेंगी ! चुनावी कार्यों का शुभारम्भ सिर्फ कुछ महीनों पहले न हो कर अब राजनैतिक दल लगातार इस पर काम करेंगे! साथ ही साथ इन चुनावों के परिणामों से एक स्पष्ट संकेत राजनैतिक दलों और राजनेताओं को जायेगा कि अब उनको भी अपने राजनीति के लिए संवेदनशील होना पड़ेगा।